जीवन के दिन चार

डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय
से.नि. प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
बी.आर.ए.बिहार विश्वविद्यालय,मुजफ्फरपुर

जीवन के दिन चार बन्धुवर
किससे क्या तकरार बन्धुवर !

आज रू-ब-रू जी भर जी लें
कल का क्या एतबार बन्धुवर!

सुख तो एक तसव्वुर जानो
दुख ही सच्चा यार बन्धुवर!

जितनी कसक कशिश उतनी ही
अजब पहेली प्यार बन्धुवर!

मिटे दूरियाँ चलो मिलाएँ
दिल से दिल का तार बन्धुवर!

०००००

सुखमय सा संसार बने

गिरिराज पांडे
प्रतापगढ़

दिल सबके सद्भाव जगे, कुंठित मन का भाव मिटे
सरिता बहे प्रेम की जिससे, पावन हृदय विशाल बने
सुख दुख एक जैसा ही देखें, मन में ऐसा भाव जगे
करुणा हृदय बसी हो सब में, मानवता का बीज उगे

फूले फले सभी जीवन में, सब में ऐसा फूल खिले
ईर्ष्या कभी न पनपे मन में, सब में प्रेम का दीप जले
सभी करें सहयोग सभी का, कर्तव्य मार्ग अपनाएं
जिससे निर्मल हो यह जीवन, प्रेम सुधा ऐसी बरसे

उथला रहे कभी ना जीवन, सागर जैसा दिल ये बने
सदवाणी की ही अब सबके, मन में लहर तरंग उठे
स्निग्ध ज्योत्सना की आभा ही, अब पूरे जग में फैले
रुके कभी ना किसी का जीवन, बहे सदा झरना जैसे

निस्वार्थ भाव ही भरे सदा, भाव स्वार्थ का सदा मिटे
फीकी पड़े इत्र की खुशबू, रिश्तों में खुशबू फैले
प्राप्त हुआ है जिसको जितना, उतना ही पर्याप्त बने
उपजे सदा संतोष हृदय में, सुखमय सा संसार बने

०००००